01 / 12 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

जादू की चाबी को
कार्य मे लगाने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा तकदीरवान हूँ

➳ _ ➳ मैं भाग्यवान आत्मा नए विश्व की तकदीर हूं

→ मुझ आत्मा की तकदीर ही विश्व की तकदीर है

■ मैं नव विश्व की श्रेष्ठ आधार स्वरूप आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मैं नए विश्व की विशेष अधिकारी आत्मा हूं

→ मुझ आत्मा का श्रेष्ठ महान नवजीवन

■ नए विश्व का निर्माण करता है

➳ _ ➳ मुझ आत्मा की कितनी श्रेष्ठ तकदीर है

→ जो बाप को भी अपने स्नेह सम्बन्ध से

→ निराकार से साकार बना लेती हूँ

→ आवाज़ से परे बाप को आवाज़ में लाती हूँ

→ स्वयं भगवान को जैसे चाहे वैसे

→ स्वरूप में लाने के मालिक को

→ सेवाधारी बना लेती हूँ

■ वाह! मुझ आत्मा की श्रेष्ठ तकदीर वाह!

➢➢ जादू की चाबी को कार्य मे लगाने का अनुभव

➳ _ ➳ बाप के सर्व खज़ानों के अधिकारी बनने की

➳ _ ➳ वा बाप को स्वयं पर समर्पण कराने की

→ चाबी मुझ आत्मा के हाथ मे है

■ कितनी न श्रेष्ठ भाग्यवान हूँ मैं आत्मा

■ जो स्वयं भगवान ने ऐसी चाबी मुझ आत्मा को दे दी है

➳ _ ➳ मै आत्मा नॉलेजफुल और सेन्सीबल बन

→ इस चाबी की अच्छे से संभाल करती हूँ

➳ _ ➳ बाबा ने मुझ आत्मा को ऐसी जादू की चाबी दी है

→ जिससे जिस शक्ति का मैं आत्मा आह्वान करु

■ वह शक्ति स्वरूप बन सकती हूँ

➳ _ ➳ एक सेकेण्ड में इस जादू की चाबी द्वारा

→ जिस लोक में जाने चाहु

■ उस लोक के वासी बन सकती हूँ

→ जिस काल को जानना चाहु

■ उस काल को जानने वाली

■ रूहानी ज्योतिषी बन सकती हूँ

➳ _ ➳ संकल्प शक्ति को जिस रफ्तार से

➳ _ ➳ जिस मार्ग पर ले जाना चाहु

→ उसी रीति से संकल्प शक्ति के

■ अधिकारी बन सकती हूँ

➳ _ ➳ इस चाबी द्वारा जो चाहूँ वो मैं आत्मा

→ एक सेकेण्ड में प्राप्त कर सकती हूँ

➳ _ ➳ अब तो मैं आत्मा यह चाबी का यूज़

→ हर समय, हर कार्य मे करती हूँ

■ चाबी लगाई

■ और तुरंत खज़ाना प्राप्त करती हूँ

➳ _ ➳ इस चाबी द्वारा मैं आत्मा कोई भी कर्म करने से पहले

→ जैसा कर्म वैसी शक्ति का आह्वान करती हूँ

■ इसलिए हर शक्ति मुझ मास्टर रचता की

■ सेवाधारी बन सेवा करती है

➳ _ ➳ जब रचता मुझ आत्मा का सेवाधारी बन गए तो

→ सर्व रचना मुझ श्रेष्ठ आत्मा के आगे

■ सेवा के लिए बाँधी हुई है

➢➢ मैं आत्मा प्रकृति जीत हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा आत्मिक शक्ति और परमात्म-शक्ति

→ का यूज़ कर असंभव कार्य को भी संभव करने का

■ महान कर्त्तव्य करती हूँ

➳ _ ➳ मुझ ईश्वरीय सन्तान मास्टर रचता

➳ _ ➳ मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे

→ यह प्रकृति और परिस्थिति भी दासी है

→ मैं आत्मा प्रकृति और परिस्थिति का

■ रूप और गुण परिवर्तन करती हूँ

➳ _ ➳ तमोगुणी प्रकृति को स्वयं की सतोगुणी स्थिति से

→ परिस्थिति पर स्व-स्थिति से

■ विजय प्राप्त करती हूँ